दुनिया ने देखा उत्तर प्रदेश का हुनर, 12.89 करोड़ के बिके उत्पाद

मऊ की साड़ी, मुरादाबाद की पीतल सामग्री खूब पसंद की गई

राजेंद्र यादव ● जागरण

प्रयागराज : संगम पर डेढ़ माह तक आयोजित महाकुंभ ने न सिर्फ लाखों लोगों को रोजगार का अवसर देकर कमाई से उनकी झोली भरी, बल्कि उत्तर प्रदेश की कला-कारीगरी को भी विश्व के सामने बखूबी रखा। यहां के प्रसिद्ध उत्पादों की जमकर बिक्री हुई। एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) प्रदर्शनी में हर जिले के उत्कृष्ट उत्पाद रखे गए थे।

प्रदर्शनी में 12,89,29,360 रुपये के उत्पाद 45 दिनों में बिक गए। प्रयागराज का मूंज शिल्प, प्रतापगढ़ का आंवला, मुरादाबाद की पीतल कारीगरी, हाथरस की हींग, बागपत की चादर, अलीगढ़ का मेटल क्राफ्ट, मीरजापुर व भदोही की कालीनें, मऊ की साड़ियां, मथुरा के ठाकुर जी के पोशाक, चित्रकूट के खिलौने जैसे अनगिनत उत्पादों ने देश के विभिन्न राज्यों और विदेश से आए लोगों को आकर्षित किया।

महाकुंभ में ओडीओपी प्रदर्शनी में विभिन्न उत्पादों से संबंधित 142 स्टाल लगे। प्रयागराज के मूंज से बनी टोकरी, डलिया, दीवारों पर सजावट व अन्य सजावटी वस्तुएं, लोगों के आकर्षण का केंद्र बनीं। प्रतापगढ़ के आंवला उत्पाद जैसे मुरब्बा, कैंडी, जूस आदि ने भी लोगों का दिल जीता।

मुरादाबाद की पीतल की मूर्तियां, दीपक, पूजन सामग्री और सजावटी वस्तुओं को विदेशी पर्यटकों ने विशेषकर पसंद किया। मऊ की साड़ियों की पारंपरिक और आधुनिक डिजाइन ने महिलाओं को लुभाया तो मथुरा के ठाकुर जी की पोशाक और शृंगार सामग्री को भक्तों ने श्रद्धा के साथ खरीदा। चित्रकूट के लकड़ी व मिट्टी के पारंपरिक खिलौने भी खूब बिके। अलीगढ़ के मेटल क्राफ्ट दरवाजों की कुंडियां, ताले, मूर्तियां और अन्य कलात्मक वस्तुएं काफी पसंद की गईं। हाथरस की हींग की सुगंध से 45 दिन तक पूरा पंडाल महकता रहा। स्थानीय उत्पादकों ने शुद्ध हींग को छोटे और बड़े पैक में पेश किया, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया। 21 लाख से अधिक की हींग स्टाल से बिकी।

महाकुंभ में लगी ओडीओपी प्रदर्शनी में उत्पादों को देखते पर्यटक (फाइल) ● विभाग

प्रदर्शनी में करीब 13 करोड़ रुपये की बिक्री दर्ज की गई है, जो एक बड़ी उपलब्धि है। इससे न केवल स्थानीय हस्तशिल्पियों को आर्थिक संबल मिला, बल्कि प्रदेश के पारंपरिक उत्पादों को वैश्विक स्तर पर पहचान भी मिली।

-शरद टंडन, उपायुक्त उद्योग

शीर्ष पांच में ये उत्पाद

उत्पाद	बिक्री
मऊ की साड़ी	64,50,310
चित्रकूट के खिलौने	50,12,470
मुरादाबाद की पीतल सामग्री	45,41,130
मुथरा की ठाकुर जी की पोशाक	41,49,040
बागपत की चादर	36,17,000

प्रदर्शनी का सबसे बड़ा असर यह रहा कि न सिर्फ उत्पादों की बिक्री में वृद्धि हुई, बल्कि हस्तशिल्पियों को अपने हुनर को प्रदर्शित करने का एक वैश्विक मंच भी मिला।

-अजय कुमार, खिलौना निर्माता, चित्रकूट

प्रदर्शनी में जो बिक्री हुई, हस्तशिल्पियों के लिए बड़ी उपलब्धि है। इस प्रकार की पहल से व्यवसाय में नई जान आई है और हस्तशिल्पियों का हौसला बढ़ा है।

-मो. शाहिद, साड़ी निर्माता, मऊ

पहले हमारे उत्पाद सिर्फ स्थानीय बाजार तक ही सीमित थे, लेकिन ओडीओपी योजना ने देशभर और विदेश तक पहुंचा दिया। इस महाकुंभ मेले में काफी लाभ हुआ। -मीना कुमारी, ठाकुर जी की पोशाक निर्माता, मथुरा।

सरकार ने ओडीओपी के तहत हस्तशिल्पियों को एक मंच दिया। उन्हें हर संभव सहयोग भी प्रदान किया। इससे उत्पादों को वैश्विक स्तर पर अच्छी पहचान मिली है।

-पुनीत, हींग निर्माता, हाथरस

प्रयागराज संग पड़ोसी जिलों को भी मिला विकास का अमृत

ज्ञानेंद्र सिंह ● जागरण

- प्रतापगढ़, कौशांबी, चित्रकूट व मीरजापुर में कई काम कराए गए
- 09 राजमार्गों को दुरुस्त कराया गया, पांच का हुआ चौड़ीकरण
- 130 किमी की गति से दौड़ने लगीं ट्रेनें प्रयागराज रूट पर
- बिजली, पानी से लेकर अन्य पर्यटन विकास के कार्य भी हुए

प्रयागराज : महाकुंभ से विकास का अमृत भी खूब छलका। न सिर्फ तीर्थराज प्रयागराज में, जहां भव्य आयोजन हुआ, अपितु पड़ोसी जिलों को भी विकास का अमृत मिला। श्रद्धालुओं की सुविधाओं के दृष्टिगत कराए गए विकास कार्यों से आसपास के जिलों की भी तस्वीर बदल गई है। चित्रकूट, मीरजापुर, कौशांबी, प्रतापगढ़ व भदोही में कई विकास कार्य हुए।

प्रयागराज से विंध्याचल धाम के लिए मीरजापुर मार्ग को बेहतरीन किया गया तो चित्रकूट हाईवे को भी चौड़ा किया गया। प्रयागराज-अयोध्या राजमार्ग फोरलेन किया गया, जिससे प्रतापगढ़, सुलतानपुर, अंबेडकर नगर व अमेठी जिले के लोगों को भी लाभ मिला। प्रयागराज-रायबरेली मार्ग के फोरलेन होने से लखनऊ की राह आसान हुई।

प्रयागराज-कानपुर, प्रयागराज-वाराणसी हाईवे के सिक्सलेन होने के कौशांबी, फतेहपुर, उन्नाव तथा भदोही के लोगों को भी आवागमन में बड़ी राहत मिली है। प्रयागराज समेत इन जिलों में भी कई रेलवे ओवर ब्रिज, अंडर ब्रिज तथा फ्लाईओवर भी बनाए गए। बिजली, पानी से लेकर अन्य पर्यटन विकास के कार्य भी कराए गए हैं। प्रयागराज-वाराणसी रेल लाइन के दोहरीकरण के चलते इस रूट पर अब 130 किमी की गति से ट्रेनें दौड़ने लगी हैं। इस रूट पर गंगा पर दारागंज से झूंसी तक पुल भी बना है। इसके अलावा उग्रसेनपुर-जंघई-फाफामऊ रूट पर भी 35 किमी तक रेलवे लाइन का दोहरीकरण किया गया है।

प्रतापगढ़ में बाईपास ने जाम से दिलाई निजात: शहर में अक्सर लगने वाली जाम की समस्या से इस बार के महाकुंभ ने निजात दिला दी। आठ साल पहले गोंडे से लेकर सुखपाल नगर तक 14 किलोमीटर का बाईपास बनाने का काम शुरू हुआ था, मगर अधूरा पड़ा था। महाकुंभ में वाहनों का दबाव देखते हुए बाईपास के एक लेन को अमृत स्नान से पहले शुरू किया गया। इससे शहर में जाम नहीं लगा। लगभग 166 करोड़ रुपये की लागत से यह बाईपास बन रहा है। सुखपाल नगर से राजगढ़ तक छह किलोमीटर बाईपास को विस्तार दिया जा रहा है। बाईपास पूरा होने पर प्रयागराज-अयोध्या हाईवे पर राजगढ़ से ही भारी वाहन घूम जाएंगे।

जसरा बाईपास से चित्रकूट व बांदा की राह आसान: प्रयागराज-चित्रकूट-बांदा राजमार्ग पर जसरा रेलवे क्रासिंग पर बाईपास का निर्माण चल रहा है। इसे महाकुंभ के पहले बन जाना था, मगर जमीन के मुआवजा को लेकर चले आंदोलन के चलते इसका निर्माण देर से शुरू हो सका था।

इस क्रासिंग पर मुंबई रूट की ट्रेनें चलती हैं जिससे फाटक अक्सर बंद रहता है और क्रासिंग के दोनों ओर जसरा बाजार में अक्सर जाम लगा रहता है। बाईपास बन जाने से अब जाम से निजात तो मिलेगी ही, साथ में प्रयागराज से चित्रकूट की राह भी आसान हो जाएगी।